Q No. 01 अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) के विभिन्न कार्यों का विस्तृत वर्णन

अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (International Monetary Fund—IMF) विश्व की प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं में से एक है। इसकी स्थापना जुलाई 1944 में ब्रेटन वुड्स सम्मेलन में की गई थी। IMF ने 1 मार्च 1947 से अपना कार्य प्रारंभ किया। इसका मुख्यालय वाशिंगटन डी.सी., अमेरिका में है।

IMF की स्थापना का मुख्य उद्देश्य ऐसी अंतर्राष्ट्रीय मौद्रिक व्यवस्था का निर्माण करना था, जिसमें विभिन्न देशों के बीच व्यापार और वित्तीय लेन-देन सुचारु रूप से हो सकें। विशेष रूप से यह संस्था उन देशों की सहायता करती है जिन्हें भुगतान संतुलन (Balance of Payments) की समस्या, विदेशी मुद्रा की कमी या आर्थिक संकट का सामना करना पड़ता है।

IMF के प्रमुख कार्यों को निम्नलिखित रूप में समझा जा सकता है।

1. अंतर्राष्ट्रीय मौद्रिक सहयोग की स्थापना

IMF का सबसे महत्वपूर्ण कार्य विभिन्न देशों के बीच अंतर्राष्ट्रीय मौद्रिक सहयोग को बढ़ावा देना है। सदस्य देशों को अपनी आर्थिक और मौद्रिक नीतियों से संबंधित समस्याओं पर चर्चा करने का अवसर मिलता है। इससे देशों के बीच आर्थिक संबंध बेहतर होते हैं और वैश्विक मौद्रिक व्यवस्था को मजबूत बनाने में सहायता मिलती है।

2. विनिमय दरों में स्थिरता बनाए रखना

अलग-अलग देशों की मुद्राओं की विनिमय दरों में अत्यधिक उतार-चढ़ाव अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और निवेश के लिए परेशानी पैदा कर सकता है। IMF सदस्य देशों को ऐसी आर्थिक नीतियाँ अपनाने की सलाह देता है, जिनसे विनिमय दरों में अत्यधिक अस्थिरता को कम किया जा सके।

स्थिर विनिमय दर से आयात-निर्यात करने वाले व्यापारियों और निवेशकों को अधिक निश्चितता प्राप्त होती है।

3. भुगतान संतुलन की समस्या का समाधान

IMF का एक प्रमुख कार्य सदस्य देशों को भुगतान संतुलन की कठिनाइयों से बाहर निकलने में सहायता करना है।

जब किसी देश के पास विदेशों से किए जाने वाले भुगतान के लिए पर्याप्त विदेशी मुद्रा नहीं होती, तो भुगतान संतुलन की समस्या उत्पन्न हो सकती है। ऐसी स्थिति में IMF उस देश को वित्तीय सहायता प्रदान कर सकता है ताकि वह आवश्यक अंतर्राष्ट्रीय भुगतान कर सके।

4. सदस्य देशों को ऋण प्रदान करना

IMF आवश्यकता पड़ने पर सदस्य देशों को ऋण प्रदान करता है। विशेष रूप से आर्थिक संकट, विदेशी मुद्रा की कमी और भुगतान संतुलन की समस्या के समय ऋण सहायता दी जाती है।

IMF का ऋण सामान्यतः आर्थिक स्थिरता बहाल करने के उद्देश्य से दिया जाता है। ऋण प्राप्त करने वाले देश को निर्धारित आर्थिक नीतियों और सुधार कार्यक्रमों का पालन करना पड़ सकता है।

5. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का विस्तार

IMF का उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के संतुलित विस्तार को बढ़ावा देना भी है। जब देशों में मौद्रिक और वित्तीय स्थिरता रहती है, तो उनके बीच व्यापार बढ़ने की संभावना अधिक होती है।

IMF व्यापार के लिए आवश्यक स्थिर आर्थिक वातावरण बनाने में सहायता करता है और सदस्य देशों की बाहरी भुगतान संबंधी समस्याओं को कम करने का प्रयास करता है।

6. विदेशी मुद्रा की व्यवस्था में सहायता

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए विदेशी मुद्रा की आवश्यकता होती है। किसी देश के विदेशी मुद्रा भंडार में कमी होने पर उसके लिए आवश्यक आयात और विदेशी भुगतान करना कठिन हो सकता है।

IMF ऐसी परिस्थितियों में सदस्य देशों को वित्तीय सहायता प्रदान करके उनकी विदेशी मुद्रा संबंधी कठिनाइयों को दूर करने में सहायता करता है।

7. विशेष आहरण अधिकार (SDR) का निर्माण और आवंटन

IMF ने विशेष आहरण अधिकार (Special Drawing Rights—SDR) की व्यवस्था की है। SDR एक अंतर्राष्ट्रीय आरक्षित परिसंपत्ति है।

SDR का उद्देश्य सदस्य देशों के आधिकारिक विदेशी मुद्रा भंडार को मजबूत करना है। आवश्यकता पड़ने पर देश SDR को अन्य देशों की उपयोगी मुद्राओं के बदले में उपयोग कर सकते हैं। इससे अंतर्राष्ट्रीय तरलता को बढ़ाने में सहायता मिलती है।

8. आर्थिक निगरानी और समीक्षा

IMF सदस्य देशों की अर्थव्यवस्थाओं की नियमित समीक्षा करता है। इसे आर्थिक निगरानी (Surveillance) कहा जाता है।

- इसमें IMF देश की–
- आर्थिक वृद्धि,
- मुद्रास्फीति,
- राजकोषीय स्थिति,
- सरकारी ऋण,
- मौद्रिक नीति,
- विदेशी व्यापार,
- भुगतान संतुलन तथा
- वित्तीय क्षेत्र
- जैसे विषयों का अध्ययन करता है।
- इसके आधार पर IMF संबंधित देश को आर्थिक नीतियों में सुधार के लिए सुझाव देता है।

9. आर्थिक संकट के समय सहायता

किसी देश में मुद्रा संकट, विदेशी भुगतान संकट या गंभीर आर्थिक असंतुलन उत्पन्न होने पर IMF सहायता प्रदान कर सकता है।

उदाहरण के लिए, यदि किसी देश के विदेशी मुद्रा भंडार में तेजी से कमी हो रही हो और वह आवश्यक विदेशी भुगतान करने में कठिनाई महसूस कर रहा हो, तो IMF वित्तीय सहायता और नीतिगत सलाह देकर स्थिति को स्थिर करने में मदद कर सकता है।

10. तकनीकी सहायता प्रदान करना

IMF केवल वित्तीय सहायता ही नहीं देता, बल्कि सदस्य देशों को तकनीकी सहायता भी प्रदान करता है।

यह सहायता मुख्य रूप से निम्न क्षेत्रों में होती है–

- कर प्रशासन
- सार्वजनिक वित्त प्रबंधन

- केंद्रीय बैंकिंग
- मौद्रिक नीति
- वित्तीय क्षेत्र का प्रबंधन
- सरकारी बजट व्यवस्था
- आर्थिक एवं वित्तीय आँकड़ों का विकास
- इससे देशों की आर्थिक संस्थाओं की कार्यक्षमता में सुधार होता है।

11. प्रशिक्षण की व्यवस्था

IMF सदस्य देशों के सरकारी अधिकारियों और आर्थिक संस्थाओं से जुड़े कर्मचारियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता है।

इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में आर्थिक नीति, वित्तीय प्रबंधन, केंद्रीय बैंकिंग, सांख्यिकी और अन्य आर्थिक विषयों से संबंधित ज्ञान दिया जाता है। इससे विकासशील देशों की प्रशासनिक और आर्थिक क्षमता को मजबूत करने में सहायता मिलती है।

12. आर्थिक नीतियों के निर्माण में सलाह

IMF सदस्य देशों को विभिन्न आर्थिक समस्याओं के समाधान के लिए नीतिगत सलाह देता है। इसमें मुद्रास्फीति को नियंत्रित करना, सरकारी वित्त को मजबूत करना, वित्तीय क्षेत्र में सुधार करना और बाहरी क्षेत्र की स्थिरता बनाए रखना शामिल हो सकता है।

हालाँकि, IMF की सलाह को देश की अपनी आर्थिक परिस्थितियों के संदर्भ में लागू करना आवश्यक होता है।

13. वैश्विक वित्तीय स्थिरता को बढ़ावा देना

एक देश की आर्थिक समस्या कई बार दूसरे देशों को भी प्रभावित कर सकती है। इसलिए IMF वैश्विक स्तर पर वित्तीय जोखिमों और आर्थिक असंतुलनों पर नजर रखता है।

यह अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय प्रणाली में स्थिरता बनाए रखने के लिए सदस्य देशों के साथ सहयोग करता है।

14. आर्थिक अनुसंधान और आँकड़ों का संग्रह

IMF विभिन्न देशों की अर्थव्यवस्थाओं से संबंधित आँकड़ों का अध्ययन करता है। यह वैश्विक आर्थिक परिस्थितियों, आर्थिक विकास, मुद्रास्फीति, व्यापार और वित्तीय क्षेत्र से संबंधित विश्लेषण प्रकाशित करता है।

इस प्रकार IMF का शोध कार्य सरकारों, अर्थशास्त्रियों और शोधकर्ताओं के लिए उपयोगी होता है।

15. विकासशील देशों की सहायता

विकासशील देशों को अक्सर विदेशी मुद्रा की कमी, भुगतान संतुलन की समस्या, कमजोर वित्तीय संस्थाओं और आर्थिक अस्थिरता जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

IMF इन देशों को वित्तीय सहायता, तकनीकी सहायता और आर्थिक सलाह प्रदान करके उनकी आर्थिक स्थिरता को मजबूत करने में योगदान देता है।

16. आर्थिक सुधार कार्यक्रमों में सहयोग

जब किसी देश को गंभीर आर्थिक संकट का सामना करना पड़ता है, तो IMF उस देश के साथ मिलकर आर्थिक सुधार कार्यक्रम तैयार कर सकता है।

इन कार्यक्रमों का उद्देश्य सामान्यतः–

- आर्थिक असंतुलन को कम करना,
- विदेशी मुद्रा की स्थिति सुधारना,
- वित्तीय स्थिरता बढ़ाना,
- राजकोषीय स्थिति मजबूत करना और अर्थव्यवस्था में विश्वास बहाल करना होता है।

17. अंतर्राष्ट्रीय भुगतान व्यवस्था को सुचारु बनाना

IMF ऐसी अंतर्राष्ट्रीय मौद्रिक व्यवस्था को बढ़ावा देता है जिसमें देशों के बीच भुगतान आसानी से हो सके। इससे अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और आर्थिक सहयोग को बढ़ावा मिलता है।

18. देशों के बीच आर्थिक संवाद को बढ़ावा देना

IMF सदस्य देशों के लिए आर्थिक मुद्दों पर संवाद और सहयोग का एक महत्वपूर्ण मंच है। विभिन्न देशों के प्रतिनिधि वैश्विक आर्थिक समस्याओं पर चर्चा करते हैं और उनके समाधान के लिए सामूहिक प्रयास करते हैं।

IMF के कार्यों का महत्व

- IMF के कार्यों का अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में व्यापक महत्व है। इसके प्रमुख महत्व निम्नलिखित हैं–
- पहला, यह अंतर्राष्ट्रीय मौद्रिक सहयोग को बढ़ाता है।
- दूसरा, यह भुगतान संतुलन की समस्या से जूझ रहे देशों को सहायता देता है।
- तीसरा, यह आर्थिक एवं वित्तीय संकटों के समय महत्वपूर्ण वित्तीय सहायता प्रदान करता है।
- चौथा, यह विनिमय दरों में स्थिरता और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के विस्तार को बढ़ावा देता है।
- पाँचवाँ, तकनीकी सहायता और प्रशिक्षण के माध्यम से देशों की आर्थिक संस्थाओं को मजबूत करता है।
- छठा, SDR के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय आरक्षित व्यवस्था को मजबूत करने में योगदान देता है।
- सातवाँ, आर्थिक निगरानी के माध्यम से संभावित आर्थिक समस्याओं की पहचान करने में सहायता करता है।

IMF की सीमाएँ

IMF के कार्यों के साथ कुछ सीमाएँ भी जुड़ी हुई हैं। IMF से ऋण प्राप्त करने वाले देशों को कई बार आर्थिक सुधार और नीतिगत शर्तों का पालन करना पड़ता है। कुछ परिस्थितियों में ये सुधार अल्पकाल में जनता और अर्थव्यवस्था पर दबाव डाल सकते हैं। इसलिए IMF की नीतियों को लेकर विभिन्न देशों में अलग-अलग मत पाए जाते हैं।

फिर भी, गंभीर भुगतान संकट और विदेशी मुद्रा की कमी की स्थिति में IMF की वित्तीय सहायता अनेक देशों के लिए महत्वपूर्ण साबित होती है।

निष्कर्ष

अंततः कहा जा सकता है कि अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष विश्व की अंतर्राष्ट्रीय मौद्रिक और वित्तीय व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है। इसका कार्य केवल सदस्य देशों को ऋण देना नहीं है, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय मौद्रिक सहयोग बढ़ाना, विनिमय दरों में स्थिरता को प्रोत्साहित करना, भुगतान संतुलन की समस्या में सहायता देना, आर्थिक निगरानी करना, SDR का आवंटन करना, तकनीकी सहायता और प्रशिक्षण प्रदान करना तथा वैश्विक वित्तीय स्थिरता को मजबूत करना भी है।